Toppersnotes

Unleash the topper in you

SUPER TET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

भाग – 1

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. हिन्दी भाषा	1
2. वर्णमाला	12
3. शब्द ज्ञान	24
4. तत्सम–तद्भव	27
5. संज्ञा	29
6. सर्वनाम	31
7. विशेषण	33
8. क्रिया	36
9. काल	38
10.लिंग	40
11.वचन	40
12.अव्यय	42
13.विदेशी भाषाओं के शब्द	45
14.संधि	48
15.समास	55
16.उपसर्ग	60
17.प्रत्यय	64
18.वाच्य	67
19.कारक	70
20.विराम चिन्ह व उनके प्रयोग	80
21.वाक्य	84
22.वाक्य रचना	92
23.वाक्य शुद्धि	96
24.शुद्ध वाक्य	98
25.मुहावरे	105
26.लोकोक्ति	116
27.अपठित पद्यांश	130
28.अपठित गद्यांश	134

29.पाठ योजना 138

30.शिक्षण विधियाँ 146

31.चर्चा 165

32.मापन व मूल्यांकन 167

33.भाषा 174

हिन्दी भाषा (मुख्य तथ्य)

→ हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है।

→ संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है

हिन्दी का विकास क्रम :—

संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ट → प्राचीन हिन्दी

→ हिन्दी शब्द मूलत: फारसी का है न कि हिन्दी भाषा का।

→ हिन्दी शब्द के दो अर्थ है – हिन्द देश के निवासी और हिन्द की भाषा

→ प्रमुख रचनाकार ⟶

→ खड़ी बोली का प्रारम्भिक रूप सरहपा आदि सिद्धो गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों जयदेव, नामदेव, रामानन्द आदि संतो की रचनाओ में उपलब्ध है।

→ ब्रजभाषा के रचनाकार ⇒ (सूरसागर) सूरदास रसखान मीराबाई आदि प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास में अमूल्य योगदान दिया है।

अवधी → कुतुबन (मृगावती), जायसी (पद्मावत), मंझन (मधुमालती) असमान (चित्रावली)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

→ राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है।
→ प्रत्येक वर्ष 14 Sep. को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
→ संविधान में भाषा विषयक उपबंध भाग 17 (राजभाषा) के अनु: 343 से 351 तक एवं 8 वी अनुसूची में दिये गये हैं।
→ हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से द्विवेदी युग सार्वाधिक महत्वपूर्ण युग था।

[हिन्दी साहित्य (मुख्य तथ्य)]

आदिकाल
650 ई० – 1350 ई०

पूर्वमध्य काल / भक्ति काल
1350 – 1650 ई०

रीतिकाल
(उत्तर दायित्व मध्यकाल
(1650 – 1850 ई०)

आधुनिक काल
(1850 से अब तक)

- भारतेन्दु युग (1850 – 1900 ई०)
- द्विवेदी युग (1900 – 1920 ई०)
- छायावाद युग (1918 – 1936 ई०)
- छायावादोत्तर युग (1936 ई० से बाद)

Toppersnotes

आदिकाल (650 ई० - 1350 ई०)

→ हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।

→ आदिकाल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल' मिश्रबंधु ने प्रारंम्भिक काल महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बीजवपन काल शुक्ल ने 'आदिकाल वीरगाथाकाल राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध - सामंत काल. राम कुमार वर्मा ने संधिकाल हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल की संज्ञा दी है।

→ इस काल में आल्हा छंद बहुत प्रचलित था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।

→ आदिकालीन रचना व रचनाकार —

	रचना	रचनाकार
(1)	खुमान रासो	दलपति विजय
(2)	बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
(3)	हम्मीर रासो	शार्ङ्गधर
(4)	पृथ्वीराज रासो	चन्दवरदाई
(5)	कीर्तिलता	विद्यापति
(6)	पउमचरिउ	स्वयम्भू
(7)	मृगावती	कुतुबन
(8)	परमाल रासो	जगनिक

Toppersnotes
Unleash the topper in you

→ भक्तिकाल को 'हिन्दी साहित्य' का स्वर्ण काल' कहा जाता है।

→ भक्तिकाल काव्य की दो काव्य धाराएं है।

(1) निर्गुण काव्य धारा — ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी

(2) सगुण काव्य धारा — कृष्णाश्रयी, रामाश्रयी

भक्तिकालीन रचना व रचनाकार

	रचना		रचनाकार
1	साखी	—	कबीरदास
2	बीजक	—	कबीरदास
3	पद्मावत	—	मलिक मुहम्मद जायसी
4	अखरावट	—	〃
5	आखिरी कलाम	—	〃
6	सूरसागर	—	सूरदास
7	सूरसारावली	—	
8	साहित्य लहरी	—	
9	श्रीराम चरितमानस	—	गोस्वामी तुलसीदास
10	विनय पत्रिका	—	〃
11	कवितावली	—	〃
12	गीतावली	—	〃
13	दोहावली	—	〃
14	कृष्ण गीतावली	—	〃
15	राम लला नहछू	—	〃
16	पार्वती मंगल	—	〃
17	जानकी मंगल	—	〃

(18)	बरवै रामायण	—	"
(19)	मधुमालती	—	मंझन
(20)	मृगावती	—	कुतबन
(21)	रामचन्द्रिका	—	केशवदास
(22)	राम आरती	—	रमानन्द
(23)	प्रेमवाटिका	—	रसखान
(24)	दानलीला	—	"
(25)	सुदामा-चरित	—	नरोत्तमदास

उत्तरमध्यकाल /रीतिकाल (1650-1850 ई०)

इसे मिश्र बंधु से अलंकृत काल. रामचन्द्र शुक्ल ने रीतीकाल और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने श्रृंगार काल कहा है।

→ रीतीकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ थी।

① रीतीकाल निरूपण ② श्रृंगारिकता

→ रीतिकाल की रचना एवं रचनाकार —

	रचना	रचनाकार
1)	रामचन्द्रिका	केशवदास
2)	रसिक प्रिया	केशवदास
3)	नखशिख	केशवदास
4)	सतसई	बिहारी
5)	शिवराज भूषण	भूषण
6)	शिवा बावनी	भूषण
7)	छत्रसाल दशक	"
(8)	पिंगल	चिन्तामणि

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(9) नरसीजी का मायरा — मीराबाई
10) रागगोविन्द — मीराबाई
11) प्रेमवाटिका — रसखान
12) गंगालहरी — पद्माकर

आधुनिक काल

① भारतेन्दु युग—

→ भारतेन्दु युग का नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के नाम पर पड़ा।

भारतेन्दु युगीन रचना व रचनाकार -

रचना		रचनाकार
(1) प्रेम-माधुरी	—	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(2) प्रेम सरोवर	—	
(3) प्रेम तरंग	—	
(4) उर्दू का स्यापा	—	
(5) प्रेमाश्रु वर्णन	—	
(6) श्रृंगार विलास	—	प्रताप नारायण मिश्रा
(7) प्रेम पुष्पावली	—	
(8) मन की लहर	—	
(9) ऋतुसंहार (अ०)	—	जगमोहन सिंह
(10) मेघदूत (अ०)	—	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(2) द्विवेदी युग (1900 ई०–1920 ई०)

– इस कालखंड के पथ प्रदर्शक, विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।

– द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा जाता है।

– मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य – 'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

→ द्विवेदी युगीन रचना व रचनाकार

	रचना		रचनाकार
(1)	गंगावतरण	–	जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'
(2)	उद्धवशतक	–	"
(3)	गंगालहरी	–	"
(4)	श्रृंगार लहरी	–	"
(5)	हिंडोला	–	"
(6)	वैदेही वनवास	–	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(7)	प्रिय प्रवास		" " "
(8)	चोखे चौपदे		
(9)	रसिक रहस्य		
(10)	साकेत	–	मैथिलीशरण गुप्त
(11)	भारत भारती		
(12)	यशोधरा		
(13)	रंग में भंग		
14	जयद्रथ – वध		
15	पंचवटी		
16	शकुन्तला		

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(17) नहुष ״

(3) छायावाद युग (1918 - 1936 ई०) →

→ छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है।

→ जयशंकर प्रसाद जी की प्रथम काव्य कृति - उर्वशी (1909 ई०)

→ जयशंकर प्रसाद प्रथम छायावाद काव्य कृति - झरना

→ अंतिम काव्य कृति - कामयानी (1937 ई०)
(सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति)

— कामायनी के पात्र - मनु श्रद्धा व इड़ा

→ छायावादी युगीन रचना व रचनाकार -

	रचना		रचनाकार
1)	कामयनी	–	जयशंकर प्रसाद
2)	आँसू	–	״
3)	लहर	–	״
4)	झरना	–	״
5)	उर्वशी	–	״
6)	अनामिका	–	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
7)	परिमल	–	״

(8)	गीतिका	—	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(9)	कुकुरमुत्ता	—	"
(10)	नये पत्ते	—	
(11)	वीणा	—	सुमित्रानन्दन पन्त
(12)	पल्लव	—	"
(13)	गुंजन	—	"
(14)	युगान्त	—	"
(15)	लोकायतन	—	"
(16)	काला और बूढ़ा चाँद	—	"
(17)	चिन्दम्बरा	—	"
(18)	नीहार	—	"
(19)	नीरजा	—	"
(20)	सान्ध्यगीत	—	"
(21)	दीपशिखा	—	"
(22)	यामा	—	"
(23)	रश्मि	—	"

(4) छायावादोत्तर युग (1936 ई० के बाद) (प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, नयी कविता)

	रचना	एवं	रचनाकार
(1)	रेणुका	—	रामधारी सिंह दिनकर
(2)	हुंकार	—	"
(3)	कुरुक्षेत्र	—	"
(4)	उर्वशी	—	"
(5)	हारे को हरिनाम	—	"
(6)	नीम के पत्ते	—	"

(7) सीपी और शंख —))
(8) आत्मा की आँखे —))
(9) हरी घास पर क्षण भर — सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय
(10) आंगन के पार द्वारा — अज्ञेय
(11) कितनी नावों में कितनी बार
(12) कर्णफूल — नरेन्द्र शर्मा
(13) गाँधी पंचशती — भवानी प्रसाद मिश्र
(14) चाँद का मुँह टेढ़ा है — गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
(15) भूरी-भरी खाक धूल — मुक्तिबोध'
(16) ठण्डा लोहा — धर्मवीर भारती
(17) अन्धा युग —))
(18) पथिक — रामनरेश त्रिपाठी
(19) ग्राम्यगीत —))
(20) जलियावाला बाग — सुभद्रा कुमारी चौहान
(21) झाँसी की रानी —))
(22) मधुकलश — हरिवंशराय 'बच्चन'
(23) मधुशाला —))
(24) त्रिभंगीमा —))
(25) चार खेमे-चौंसठ खूँटे —))
(26) सतरंगे पंखो वाली — नागार्जुन
(27) प्यासी पथराई आँखे —))
(28) तुमने कहा था — नागार्जुन
(29) फूल नहीं रंग बोलते हैं। — केदारनाथ अग्रवाल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(30) पंख और पतवार – ''

(31) युग की गंगा – ''

(32) संसद से सड़क तक – सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

रचना	साहित्यकार	वर्ष
(1) चिदंबरा	पंत	1968 ई०
(2) उर्वशी	'दिनकर'	1972 ई०
(3) कितनी नावों में कितनी बार	'अज्ञेय'	1978 ई०
(4) यामा	महादेवी वर्मा	1982 ई०

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

रचना	साहित्यकार	वर्ष
हिमतरंगिनी (काव्य)	माखनलाल चतुर्वेदी	1955 ई०
कला और बूढ़ा चाँद (काव्य)	पंत	1960 ई०
कलम का सिपाही (जीवनी)	अमृतराय	1963 ई०
आँगन के पार द्वार (काव्य)	'अज्ञेय'	1964 ई०
मुक्ति बोध (उपन्यास)	जैनेन्द्र	1966 ई०
नीला चाँद (उपन्यास)	शिवप्रसाद सिंह	1990 ई०
जिंदगीनामा (उपन्यास)	कृष्णा सोबती	1980 ई०
दो चट्टानें (काव्य)	हरिवंशराय 'बच्चन'	1968 ई०
भूले-बिसरे चित्र (उपन्यास)	भगवतीचरण वर्मा	1961 ई०

वर्ण, स्वर व व्यंजन

⇒ उच्चरित रूप को ध्वनि कहते है।

⇒ उच्चरित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है।

⇒ ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते है लिखित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ जिस वर्ण के आगे कोई टुकडे नही होते है उन्हे अक्षर कहते है।

⇒ अक्षर चार होते है – अ, इ, उ, ऋ

Note दो या दो से अधिक सार्थक वर्णों के समुहो को शब्द कहते है।

⇒ शब्द दो प्रकार के होते है – 1) सार्थक ② निरर्थक

⇒ निरर्थक – नि: + अर्थक – विसर्ग सन्धि
⇒ निर + अर्थक – निरर्थक (संयोग)

चाय – वाय
खाना – वाना
पंखा – वखा

⇒ अर्थ की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई शब्द होती है।

⇒ दो या दो से अधिक सार्थक शब्दो के अर्थ समुहो को वाक्य कहते है।

⇒ भावो और विचारो की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई वाक्य है।

⇒ विद्वानो ने भाषा की पूर्ण परिपक्व इकाई वाक्य को कहा है।

1 ⇒ व्याकरण
2 ⇒ वैयाकरण – व्याकरण का भाग

सही शब्द ⇒ , प्रज्वल, प्रज्वलित, प्रोज्ज्वल

⇒ भाषा की सबसे बडी इकाई वाक्य को कहा जाता है।

⇒ कुल - योग पैर मे पुरा। (क्रम)
कूल – किनारा सिर मे आधा।। (कर्म)

वर्ण

⇒ सर्वप्रथम 'अ' वर्ण की उत्पत्ती हुई।
⇒ सभी वर्णो की उत्पत्ति शिवजी के डमरू से हुई।
⇒ वर्णो को लिपी चिन्ह कहते है
⇒ वर्णो की संख्या हिन्दी ५५ होती है। हिन्दी मे कुल वर्णो की संख्या 52 होती है।

⇒ स्वर :– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ
ओ, औ

⇒ वर्णों के भेद – वर्णों के दो भेद होते है :–
⇒ स्वर (11) (2) व्यंजन (33)

⇒ स्वर :– जिन वर्णों के उच्चारण मे स्वर तंत्रिकाओं मे कम्पन, घर्षण, और बल नही लगाया जाता है उन्हे स्वर कहते है।

⇒ स्वर स्वतंत्र होते है। कृति – रचना
⇒ स्वरो के छः भेद होते है। कृती – विद्वान

(1) उच्चारण काल के आधार पर
(2) उच्चारण के आधार पर
(3) उत्पति के आधार पर
(4) जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर
(5) ओस्ठाकृति के आधार पर
(6) मुखाकृति के आधार पर

1. उच्चारण काल के आधार पर स्वरो के भेद
⇓
⇓ स्वर (ह्रस्व स्वर) ⇓ गुरू स्वर (दीर्घ स्वर)

[अ, इ, उ, ऋ] [आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ]

सही शब्द ⇒ ह्रस्व। हृदय – हृदय, ह्रद – तालाब

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1 ⇒ **लघु स्वर** :– जिन स्वरो के उच्चारण मे कम समय लगता है उन्हे लघु-स्वर कहते है।

⇒ लघु स्वरो की संख्या हिन्दी मे चार होती है :–
(अ, इ, उ, ऋ)

⇒ लघु स्वरो के अन्य नाम :–
(1) अह्रस्व स्वर (2) ह्रस्व स्वर
(3) नैसर्गिक स्वर (4) अखण्डित स्वर
(5) प्राकृतिक स्वर (6) मूल स्वर
(7) एक मात्रा वाले स्वर

⇒ लघु शब्द का विलोम गुरु होता है।
⇒ लघु + अ = लाघव ह्रस्व + अ = ह्रस्व
दीर्घ + अ = दीर्घ गुरु + अ = गौरव

2 **गुरु स्वर** ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे लघु स्वरो से दुगुना समय लगता है उन्हे गुरु स्वर कहते है।

⇒ हिन्दी मे गुरु स्वरो की संख्या सात है :–
(आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ गुरु स्वरो के अन्य नाम :–
(1) दीर्घ स्वर
(2) दो मात्रा वाले स्वर
(3) संयुक्त स्वर